



किसानों के मित्र कहलाने वाले पक्षी

कीट खाने वाले पक्षी:



ल्लू-टेल्ड बी-ईटर



मैना



गौरैया



फोटो: avibirds.com

चीन से दक्षिण अफ्रीका तक 22,000 किलोमीटर की प्रवासी उड़ान के दौरान, अमूर फाल्कन पक्षियाँ पूर्वोत्तर भारत में 18 दिनों का ठहराव लेते हैं और अरबों दीमकों को चट कर जाते हैं!

कृतक खाने वाले पक्षी:



उल्लू



चील



बाज



गिर्धों का एक झुंड सिर्फ 3-5 मिनट में शव को खाकर खत्म कर सकता है!



फोटो: chilika.com

ओडिशा की चिलिका झील में पक्षियों के मल से प्रतिवर्ष 33.8 टन नाइट्रोजन और 10.5 टन फॉस्फोरस का जमाव होता है, जिसके परिणामस्वरूप मैक्रोफाइट्स का उच्च बायोमास और मछली उत्पादन होता है।

महत्वर पक्षी:



गरुड़



गिर्ध



कौआ



क्या आप जानते हैं?



फोटो: स्ट्रीव एलेन

एक खलिहान उल्लू सालाना 35 किलोग्राम तक चूहे खा जाता है। अपने दस साल के जीवनकाल में, यह 12,775 चूहों को खा सकता है!



विकसित द्वारा

बर्ड रिंगिंग एवं मॉनिटरिंग स्टेशन,
भागलपुर, बिहार
संयुक्त उद्यम
पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन
विभाग, बिहार और बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री
सोसायटी

brms.bihar@gmail.com

+91 9661037446

पक्षी और किसान



“हमारी रक्षा,
तुम्हारी
समृद्धि!”





पक्षी और किसान

पक्षी किसान के सबसे अच्छे दोस्त माने जाते हैं, जो कृषि भूमि के स्वास्थ्य को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनकी उपस्थिति स्थाई खेती का समर्थन करती है, रसायनों की आवश्यकता को कम करती है और संतुलित पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देती है।

आइए कृषि में पक्षियों की कुछ महत्वपूर्ण भूमिकाओं के बारे में जानें:

- कीट नियंत्रण:** गौरैया, उल्लू, मैना, बी-इटर्स और ड्रॉंगो जैसे पक्षी फसल को नुकसान पहुँचाने वाले कीटों जैसे कीड़े और कृतक खाते हैं।
- बीज फैलाव:** पक्षी बीज और फल खाते हैं और उन्हें अपने मल के माध्यम से बड़े क्षेत्रों में फैलाते हैं, जिससे पौधों की पुनर्वृद्धि और विविधता में मदद मिलती है।
- परागण:** सनबर्ड और फ्लावरपेकर जैसे कुछ पक्षी परागण में मदद करते हैं। पौधों को प्रजनन करने और फसल की पैदावार में सुधार लाने में सहायक होते हैं।
- खरपतवार नियंत्रण:** कुछ पक्षी खरपतवार के बीज खाते हैं, जिससे कृषि क्षेत्रों में अवांछित पौधों की वृद्धि कम होती है।
- मिट्टी का वातन:** मोर जैसे पक्षी कीटों और केचुओं की तलाश में मिट्टी खोदते हैं, जिससे मिट्टी को वातन मिलता है और पोषक तत्वों से भरपूर होने में मदद मिलती है।



- उर्वरीकरण:** पक्षियों के मल में नाइट्रोजन और फास्फोरस जैसे पोषक तत्व भरपूर मात्रा में होते हैं, जो प्राकृतिक उर्वरक के रूप में कार्य करते हैं जो मिट्टी की उर्वरता और फसल उत्पादकता को बेहतर बनाने में मदद करते हैं।
- जैव विविधता स्वास्थ्य संकेतक:** पक्षियों की उपस्थिति पारिस्थितिकी तंत्र के स्वास्थ्य का संकेत दे सकती है। पक्षियों की अच्छी आबादी एक स्वस्थ, संतुलित वातावरण का संकेत देती है।



- फसल चक्रों को लागू करना:** विविध फसल चक्रों को अपनाने से पक्षियों को साल भर भोजन की आपूर्ति मिल सकती है, जिससे विशिष्ट मौसमों के दौरान कुछ फसलों पर उनकी निर्भरता कम हो जाती है।

- घोंसलों के लिए संरचनाएँ प्रदान करना:** पक्षियों के लिए घर, घोंसले के लिए बक्से या प्लेटफॉर्म स्थापित करना, जहाँ प्राकृतिक घोंसले के स्थल सीमित हैं, वहाँ गुहा-घोंसले वाले पक्षियों के लिए अतिरिक्त घोंसला बनाने का अवसर मिलेगा।

- संरक्षण कार्यक्रमों में भाग लेना:** पक्षी-अनुकूल कृषि कार्यक्रमों और सहयोगों में भाग लेने से पक्षी-अनुकूल प्रथाओं को अपनाने के लिए समर्थन, मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मिल सकता है।

